Leadership, Education, Personality: An Interdisciplinary Journal ISSN: 2524-6178
www.sibe.rpress.co.in, Vol. 18, Issue 06 June 2023, UGC CARE 1

हरियाणा के हिसार जिले में वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के किशोरावस्था के विद्यार्थियों की समस्याओं का अध्ययन

Dr. Rajesh Kumar, Assistant Registrar,

Shri Vishwakarma Skill University Palwal Haryana

भूमिका

'शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य शिक्षार्थी के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है। हमारी जीवन लीला गर्भाधान के समय से ही प्रारंभ हो जाती है। कितनी विचित्र सी बात लगती है कि एक छोटे से निषेचित अंडे से छोटे-छोटे बढ़ते, हम आज की अवस्था को प्राप्त कर पाए हैं। निश्चय ही यह सब यौनानुक्रम और वातावरण संबंधी शक्तियों के परस्पर सहयोग का फल है। शिक्षा चाहे औपचारिक हो या अनौपचारिक, इस वृद्धि और विकास के मार्ग में बच्चे का भली-भांति पथप्रदर्शन कर सकती है। इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए हम आगामी पंक्तियों में वृद्धि और विकास के सभी पहलुओं का वर्णन करेंगे।

वृद्धि और विकास

वृद्धि और विकास ये दोनों शब्द प्रायः बिना कोई भेदभाव किए पर्यायवाची रूप में कार्य में लाए जाते हैं। दोनों ही यह प्रकट करते हैं कि गर्भाधान के समय से किसी विशेष समय तक किसी प्राणी में कितना परिवर्तन आया है। इस परिवर्तन की प्रक्रिया में वातावरण की शक्तियों और शिक्षा का महत्वपूर्ण हाथ होता है। इनकी कृपा से हमारे व्यक्तित्व के सभी पहलुओं–शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, नैतिक आदि का सब ओर से विकास होता है। इस प्रकार से वृद्धि और विकास, दोनों शब्दों का प्रयोग बालक की आयु बढ़ने के साथ-साथ होने वाले परिवर्तनों के लिए किया जाता है और इसलिए यह प्राकृतिक रूप से यौनानुक्रम, वातावरण और शिक्षा की उपज माने जाते हैं। परंतु यदि गहराई से देखा जाए तो वृद्धि और विकास के बीच कुछ अंतर दिखाई पड़ता है।

किशोरावस्था एवं उसकी विशेषताएँ

किशोरावस्था बसंत ऋतु की तरह है। यह अवस्था जीवन में उल्लास, सुख, समृद्धि उत्पन्न कर देती है। इस अवस्था में जीवन की तरंगे अपने सर्वोच्च शिखर को छूती हैं। किशोरावस्था का आरंभ और अंत कब माना जाए, इस पर काफी मतभेद है। किशोरावस्था को कुछ विद्वानों ने दो भागों में बांटा है–प्रारंभिक किशोरावस्था (13 से 15 वर्ष तक) और उत्तर किशोरावस्था (16 से 19 वर्ष तक)। इसके समय के विषय में प्रत्येक विद्वान ने अपना अलग-अलग मत दिया है। किसी ने 11 से 17 वर्ष तक माना है, तो किसी ने 12 से 18 वर्ष तक, और किसी ने 13 से 19 वर्ष तक माना है। सामान्यतः

किशोरावस्था की उम्र 13 से 19 वर्ष तक ही मानी जाती है। गर्म प्रदेशों में ठंडे प्रदेशों की अपेक्षा किशोरावस्था का काल जल्दी शुरू और समाप्त हो जाता है।

किशोरावस्था की समस्याएँ

किशोरावस्था में शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक और सामाजिक परिवर्तन बहुत तेजी से होते हैं। किशोर उचित मार्गदर्शन के अभाव में अपने आपको इन जटिल परिस्थितियों के अनुरूप समायोजित नहीं कर पाते। किशोरावस्था में लड़के-लड़कियाँ बहुत-सी समस्याओं से घिर जाते हैं।

शोध की आवश्यकता

किशोर ही इस समाज के सही कर्णधार होते हैं। ये ही देश का भविष्य हैं। यदि आज हमारा किशोर समस्याग्रस्त है, तो कुल मिलाकर हमारा भविष्य भी समस्याग्रस्त हो सकता है। इसलिए यह जरूरी हो जाता है कि हमें किशोरों की समस्याओं की जानकारी हो, ताकि इनका उचित समाधान कर किशोर को समस्यामुक्त किया जा सके।

किशोरावस्था मानव जीवन की अत्यंत महत्वपूर्ण अवस्था है। इस अवस्था में सर्वाधिक परिवर्तन होते हैं। किशोर शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक परिवर्तनों के कारण अनेकों समस्याओं से ग्रसित हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में वे विभिन्न कठिनाइयों, कुंठाओं, निराशा और चिंताओं से घिर जाते हैं। किशोर परिवार के सदस्यों, सगे,संबंधियों, सहपाठियों के साथ उचित रूप में समायोजन नहीं कर पाते, साथ ही शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक परिवर्तनों के कारण अनेक समस्याओं से ग्रसित हो जाते हैं। ये सुरक्षा, प्यार और निर्देशन चाहते हैं, परंतु साथ ही यह अपने कार्यों की स्वतंत्रता भी चाहते हैं। ऐसी दुविधा की स्थिति में उनके पथभ्रष्ट होने की संभावना बढ़ जाती है। ऐसी स्थिति में किशोरों को बचाने के लिए उनकी समस्याओं को जानना आवश्यक है।

किशोर ही राष्ट्र एवं समाज के भागीदार होते हैं। अतः किशोरों के महत्व को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने हिसार जिले के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के किशोरावस्था के विद्यार्थियों की समस्याओं का अध्ययन करने की आवश्यकता का अनुभव किया तथा प्रस्तुत शोध समस्या का चयन किया।

समस्या कथन

"हरियाणा के हिसार जिले में वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के किशोरावस्था के विद्यार्थियों की समस्याओं का अध्ययन।"

समस्या में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय

वह विद्यालय जहां प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा के उपरांत तथा उच्चतर शिक्षा से पहले की शिक्षा प्रदान की जाती है, उन्हें वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कहा जाता है।

किशोरावस्था

किशोरावस्था बाल्यावस्था तथा प्रौढ़ावस्था के मध्य की परिवर्तनशील अवस्था है।

विद्यार्थी

विद्यालय में विद्या प्राप्त करने वाले को विद्यार्थी कहते हैं, जो अध्ययन का केंद्र बिंदु होता है। विद्यार्थी औपचारिक रूप से शिक्षा प्राप्त करने वाला व्यक्ति है, जिसके द्वारा व्यवहार में परिवर्तन करने के लिए सुनियोजित प्रयास किए जाते हैं। प्रस्तुत शोध में विद्यार्थी का अर्थ वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों से है।

अध्ययन के उद्देश्य

- **हिसार जिले के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के किशोरावस्था के विद्यार्थियों की पारिवारिक, विद्यालयी, सामाजिक व व्यक्तिगत समस्याओं का अध्ययन करना।**
- **हिसार जिले के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के किशोरावस्था के विद्यार्थियों की पारिवारिक, विद्यालयी एवं व्यक्तिगत समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।**
- **हिसार जिले के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के किशोरावस्था के विद्यार्थियों की पारिवारिक, विद्यालयी एवं व्यक्तिगत समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।**

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

- **किशोरावस्था के छात्रों एवं छात्राओं की पारिवारिक, विद्यालयी, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं में कोई अंतर नहीं है।**
- **शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के किशोरावस्था के विद्यार्थियों की समस्त पारिवारिक, विद्यालयी, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं में कोई अंतर नहीं है।**

परिसीमाएँ

1. **यह शोध किशोरावस्था के 100 छात्रों तक सीमित रखा गया है।**

2. यह शोध केवल ग्रामीण तथा शहरी किशोर छात्र-छात्राओं तक सीमित है।
3. यह शोध हरियाणा के हिसार जिले के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों तक सीमित है।

अध्ययन अभिकल्प

प्रस्तुत शोध में एक समूह केस अध्ययन अभिकल्प का चयन किया गया है, क्योंकि इस शोध में वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों का एक समूह लिया गया है।

चयनित विधि

शोधार्थी द्वारा इस शोध कार्य में विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन की जनसंख्या

प्रस्तुत शोध कार्य में हरियाणा के हिसार जिले से संबंधित वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों को इस शोध की जनसंख्या के रूप में लिया गया है।

अध्ययन नमूना

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु, शोधार्थी ने यादृच्छिक विधि का प्रयोग करते हुए हरियाणा के हिसार जिले के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों से 50 ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों को लिया है, जिसमें 25 छात्र और 25 छात्राएं हैं, तथा 50 शहरी क्षेत्र से लिए गए हैं, जिनमें 25 छात्र और 25 छात्राएं हैं। अतः इस लघु शोध के कुल 100 नमूने हैं।

चयनित अध्ययन उपकरण

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीय पद्धतियाँ

प्रस्तुत अध्ययन में एकांश विश्लेषण करने में "टी" मूल्य का उपयोग किया गया। उच्च एवं निम्न समूहों के प्रत्येक पद के उत्तरों में अंतर जानने के लिए प्रत्येक पद का विभेदीकरण मूल्य ज्ञात किया गया। इसके लिए सर्वप्रथम मध्यमान, प्रामाणिक विचलन ज्ञात कर दोनों मध्यमानों की प्रामाणिक त्रुटि एवं अंतर प्रामणिक त्रुटि निकाली गई। मध्यमानों से विभेदीकरण मूल्य ज्ञात किए गए तथा 'टी' मूल्य की सहायता से अच्छे एकांशों का चयन किया गया।

परिणाम

- आँकड़ों के निरीक्षण से स्पष्ट होता है कि किशोरावस्था के छात्र एवं छात्राओं की पारिवारिक, विद्यालयी, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं में अंतर है, जिसका मापन सारणी में अंकों की प्रवृत्ति में समानता दिखाई देती है। आँकड़ों की गणना द्वारा 'टी' का मान 3.19 है, जोकि सारणी में 0.01 तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 1.984 तथा 2.626 से अधिक है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना, सार्थकता के दोनों स्तरों (0.01 तथा 0.05) पर अस्वीकृत होती है। निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि किशोरावस्था के छात्रों एवं छात्राओं की पारिवारिक, विद्यालयी, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं में अंतर है।
- आँकड़ों के निरीक्षण से स्पष्ट हो जाता है कि ग्रामीण एवं शहरी किशोरावस्था के छात्र एवं छात्राओं की पारिवारिक, विद्यालयी, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं में अंतर नहीं है। आँकड़ों की गणना द्वारा 'टी' का मान 1.22 है, जोकि सारणी में 0.01 तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 1.984 तथा 2.626 से कम है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना, सार्थकता के दोनों स्तरों 0.01 तथा 0.05 पर स्वीकृत होती है। निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के किशोरावस्था के विद्यार्थियों की समस्त पारिवारिक, विद्यालयी, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं में कोई अंतर नहीं है।

शैक्षिक निहितार्थ

- इस शोध से अध्यापकों को किशोर छात्र-छात्राओं की समस्याओं का पता चलेगा तथा उन समस्याओं के निदान में सहायता प्राप्त होगी।
- इस शोध से अभिभावकों को अपने किशोर बच्चों की समस्याओं का पता चलेगा और उन समस्याओं के निदान के प्रति उनके व्यवहार में भी उचित परिवर्तन होगा।
- इस शोध से किशोरों को अपने आयु वर्ग में आने वाली समस्याओं का पता चलेगा एवं उन समस्याओं से निपटने के लिए उन्हें तैयार करने में सहायता प्राप्त होगी।
- इस शोध से समाज को किशोरों की समस्याओं का पता चलेगा एवं उनके प्रति व्यवहार में उचित परिवर्तन भी होगा और उनकी समस्याओं को हल करने के संभव प्रयास करने में भी सहायता प्राप्त होगी।

आगामी शोध के लिए सुझाव

1. किशोर छात्रों एवं छात्राओं की व्यक्तिगत समस्याओं का अध्ययन किया जा सकता है।
2. किशोर छात्रों एवं छात्राओं की विद्यालयी समस्याओं का अध्ययन किया जा सकता है।
3. किशोर छात्रों एवं छात्राओं की सामाजिक समस्याओं का अध्ययन किया जा सकता है।
4. किशोर छात्रों एवं छात्राओं की व्यक्तिगत समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

5. **किशोर छात्रों एवं छात्राओं की विद्यालयी समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।**
6. **किशोर छात्रों एवं छात्राओं की सामाजिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।**